

6-परिवर्तन के महान क्षण

अध्याय 1: परिवर्तन के महान क्षण

यह अध्याय समय के साथ आए वैचारिक परिवर्तन पर प्रकाश डालता है, जहाँ पहले भाव-संवेदनाओं का महत्व था और अब भौतिक प्रत्यक्षवाद ही सब कुछ बन गया है।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: बीसवीं सदी के अंत तक समय में क्या बड़ा बदलाव आया है?

उत्तर: बीसवीं सदी के अंत तक भाव-संवेदनाओं का स्थान भौतिक जगत और प्रत्यक्षवाद ने ले लिया है।

2. प्रश्न: पुराने समय में संवेदनाओं की शक्ति के क्या उदाहरण दिए गए हैं?

उत्तर: पुराने समय में संवेदनाओं की शक्ति से मिट्टी के द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाई, मीरा के बुलाने पर कृष्ण नृत्य करने आते थे और गांधारी की दृष्टि से दुर्योधन का शरीर अष्ट-धातु का हो गया था।

3. प्रश्न: प्रत्यक्षवाद क्या है?

उत्तर: प्रत्यक्षवाद वह विचारधारा है जिसमें उसी चीज को सच माना जाता है जिसे आँखों से देखा और हाथों से दिखाया जा सके, जैसे बाजीगर का खेल।

4. प्रश्न: भौतिक विज्ञान और दर्शन की कसौटी क्या है?

उत्तर: भौतिक विज्ञान और दर्शन की कसौटी यह है कि जो चीज प्रत्यक्ष नहीं है, वह अमान्य है।

5. प्रश्न: प्रत्यक्षवाद के कारण किन दो चीजों की मान्यता समाप्त कर दी गई?

उत्तर: आत्मा और परमात्मा की मान्यता समाप्त कर दी गई, क्योंकि उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: प्रत्यक्षवाद को अपनाने से समाज को क्या हानि हुई?

उत्तर: प्रत्यक्षवाद को अपनाने से यह हानि हुई कि नीतिमत्ता, आदर्शवादिता और धर्म-धारणाओं को भी अस्वीकार कर दिया गया, जिससे मानवीय गरिमा के अनुरूप अनुशासन लगभग समाप्त हो गया।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नई मान्यता ने मनुष्य को क्या मान लिया है?

उत्तर: नई मान्यता के अनुसार, मनुष्य को एक चलता-फिरता पौधा या अधिक से अधिक बातचीत कर सकने वाला पशु मान लिया गया है।

3. प्रश्न: प्रत्यक्षवाद ने अपराधों और अनैतिकता के लिए द्वार कैसे खोल दिए?

उत्तर: प्रत्यक्षवाद ने यह तर्क दिया कि जब पशुओं के लिए कोई नैतिक बंधन नहीं है, तो मनुष्य के लिए क्यों

हो? इससे दूसरों को हानि पहुँचाकर तत्काल लाभ उठाने की प्रवृत्ति बढ़ी, जिससे अपराध और अनैतिकता को बढ़ावा मिला।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "भाव-संवेदनाओं का चमत्कार" और "प्रत्यक्षवाद" की तुलना कैसे की है? इस तुलना का मूल उद्देश्य क्या है?

उत्तर: लेखक ने तुलना करते हुए बताया है कि पहले भाव-संवेदनाओं में इतनी शक्ति थी कि वे असंभव को संभव कर देती थीं, जिसे हर कसौटी पर सही पाया जाता था। इसके विपरीत, आज का प्रत्यक्षवाद केवल उसी को सत्य मानता है जो तुरंत और आँखों के सामने घटित हो। इस तुलना का उद्देश्य यह दर्शाना है कि भौतिक प्रगति ने हमें आत्मा, चेतना और नैतिकता जैसी गहरी और शक्तिशाली सच्चाइयों से दूर कर दिया है, जिससे मानवीय मूल्यों का हास हुआ है।

2. प्रश्न: "बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है" - इस तर्क का प्रयोग प्रत्यक्षवादी दर्शन को सही ठहराने के लिए कैसे किया गया है? इसके क्या दूरगामी परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर: इस तर्क का उपयोग यह कहने के लिए किया गया है कि प्रकृति में जब शक्तिशाली जीव कमजोर पर शासन करता है, तो समर्थ मनुष्य को भी असमर्थों का शोषण करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। इसके दूरगामी परिणाम भयावह हैं, क्योंकि यह मान्यता समाज में शोषण, अन्याय और अराजकता को बढ़ावा देती है, जहाँ नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं का कोई स्थान नहीं रह जाता।

अध्याय 2: विज्ञान और प्रत्यक्षवाद ने क्या सचमुच हमें सुखी बनाया है?

यह अध्याय इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि क्या वैज्ञानिक प्रगति और भौतिकवादी सोच ने वास्तव में मानव को सुख दिया है। यह तर्क और तात्कालिक लाभ पर आधारित आधुनिक जीवन शैली पर सवाल उठाता है।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लोग तप, संयम और परमार्थ जैसी मान्यताओं को क्यों नहीं स्वीकारना चाहते?

उत्तर: क्योंकि इन मान्यताओं से कोई तात्कालिक भौतिक लाभ नहीं मिलता, जबकि वैज्ञानिक उपलब्धियाँ तुरंत लाभ देती हुई प्रतीत होती हैं।

2. प्रश्न: मनीषी नीत्से ने ईश्वर के बारे में क्या घोषणा की थी?

उत्तर: नीत्से ने घोषणा की कि "तर्क के इस युग में पुरानी मान्यताओं पर आधारित ईश्वर मर चुका।"

3. प्रश्न: प्रत्यक्षवादी बौद्धिक बहुमत ने धर्म को क्या कहा है?

उत्तर: उन्होंने धर्म को "अफीम की गोली" कहा है, जो पिछड़ों को उनकी बुरी स्थिति में चुपचाप रहने के लिए मजबूर करती है।

4. प्रश्न: धर्म का ढोंग करने वाले लोग वास्तव में किसे अपनाए रहते हैं?

उत्तर: वे निजी जीवन में स्वार्थपरता को ही अपनाए रहते हैं, जो अधार्मिकता की परिधि में आती है।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आडम्बर, पाखण्ड और प्रपंच क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह एक प्रकार की प्रच्छन्न (छिपी हुई) नास्तिकता है।

6. प्रश्न: पुराने समय में ऋषि-तपस्वी अभावों में भी कैसा जीवन जीते थे?

उत्तर: वे आज के सुखी-समृद्ध लोगों की तुलना में कहीं अधिक सुख-शांति भरा और प्रगतिशील जीवन जीते थे।

7. प्रश्न: विज्ञान द्वारा उत्पादित सुविधा-सामग्री का लाभ अधिकतर किन्हें मिला है?

उत्तर: इसका लाभ अधिकतर सुसम्पन्न, समर्थ और चतुर लोगों को मिला है, जो संख्या में बहुत कम हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: तथाकथित धार्मिक लोग और नास्तिक एक ही स्तर के कैसे बन जाते हैं?

उत्तर: क्योंकि तथाकथित धार्मिक लोग भी अपने निजी जीवन में अधर्मी और नास्तिकों जैसा ही आचरण करते हैं। वे धर्म का आडम्बर केवल दूसरों को धोखा देने या लाभ उठाने के लिए करते हैं, जिससे उनका आचरण भी स्वार्थपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार, दोनों ही नैतिक रूप से एक ही स्तर पर आ जाते हैं।

2. प्रश्न: लेखक ने विज्ञान द्वारा दी गई प्रगति को "वास्तविक प्रगति" मानने पर संदेह क्यों व्यक्त किया है?

उत्तर: लेखक को संदेह है क्योंकि यह प्रगति कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित है, जिन्होंने इसे भोले-भाले और पिछड़े लोगों के अधिकारों का अपहरण करके हासिल किया है। इस प्रगति के पीछे अधिकांश लोगों के शोषण का कुचक्र काम कर रहा है।

3. प्रश्न: इस अध्याय के अनुसार, सतयुग का वातावरण कैसा था और उसे हम पुनः क्यों पाना चाहते हैं?

उत्तर: सतयुग का वातावरण सुख-शांति से भरा था, जहाँ लोग अभावों के बावजूद हँसते-हँसाते और प्रगतिशील जीवन जीते थे। हम उसे पुनः पाना चाहते हैं क्योंकि आज की तथाकथित समृद्धि के बावजूद समाज में वह सुख और शांति नहीं है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: धर्म को "अफीम की गोली" कहने के पीछे क्या तर्क दिया गया है? लेखक इस तर्क से किस प्रकार की सामाजिक स्थिति की ओर इशारा कर रहे हैं?

उत्तर: धर्म को "अफीम की गोली" कहने के पीछे यह तर्क है कि यह गरीबों और पिछड़ों को उनके दुखों और शोषण के खिलाफ आवाज उठाने से रोकता है और उन्हें चुपचाप सब कुछ सहने के लिए प्रेरित करता है। लेखक

इस तर्क के माध्यम से उस सामाजिक स्थिति की ओर इशारा कर रहे हैं, जहाँ धर्म का उपयोग शोषक वर्ग द्वारा शोषितों को नियंत्रण में रखने के एक उपकरण के रूप में किया जाता है, और अन्याय को सही ठहराने के लिए परलोक का भय दिखाया जाता है।

2. प्रश्न: "बहिरंग की इसी स्तर की चमक-दमक को देखकर अनुमान लगता है कि विज्ञान ने अपने समय को बहुत सुविधा-सम्पन्न बनाया है। परन्तु दूसरी ओर तनिक-सी दृष्टि मोड़ते ही पर्दा उलट जाता है और दृश्य ठीक विपरीत दीखने लगता है।" इस कथन का विस्तार से विश्लेषण करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि पहली नजर में विज्ञान की उपलब्धियाँ (जैसे नई तकनीक, सुख-सुविधाएं) बहुत प्रभावशाली और लाभकारी लगती हैं, जिससे लगता है कि मानव जीवन बहुत बेहतर हो गया है। लेकिन जब हम गहराई से देखते हैं, तो एक कड़वी सच्चाई सामने आती है। यह "विपरीत दृश्य" यह है कि ये सुविधाएं केवल कुछ मुट्ठी भर समर्थ लोगों तक सीमित हैं और इन्हें हासिल करने के लिए बहुसंख्यक गरीब और कमजोर लोगों का शोषण किया गया है। इस प्रकार, जो प्रगति दिखती है, वह वास्तव में असमानता और अन्याय की नींव पर खड़ी है।

अध्याय 3: नीतिरहित भौतिकवाद से उपजी दुर्गति

यह अध्याय बताता है कि कैसे नैतिकता के बिना भौतिक प्रगति विनाशकारी परिणाम लाती है। यह औद्योगीकरण, प्रदूषण, और मानवीय संबंधों में गिरावट जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालता है।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, दुनिया में अभाव और गरीबी कृत्रिम क्यों है?

उत्तर: अभाव कृत्रिम है क्योंकि अगर उत्पादित सम्पदा सभी में बराबर बाँट गई होती, तो सभी लोग समान स्तर का जीवन जी रहे होते। यह कुछ लोगों द्वारा अधिक बटोरने के कारण उत्पन्न हुआ है।

2. प्रश्न: विज्ञान के साथ किस चीज का समावेश न होने के कारण समर्थ व्यक्ति दैत्य-दानव बन गया?

उत्तर: विज्ञान के साथ सद्ज्ञान का समावेश न होने के कारण समर्थ व्यक्ति दैत्य-दानव बन गया।

3. प्रश्न: औद्योगीकरण ने पर्यावरण को कैसे प्रदूषित किया है?

उत्तर: औद्योगीकरण के नाम पर बने कारखानों ने संसार भर में वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण फैला दिया है।

4. प्रश्न: अणु शक्ति की बढ़ोत्तरी का भविष्य की पीढ़ियों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर: अणु शक्ति की बढ़ोत्तरी से फैले विकिरण के कारण भविष्य की पीढ़ियों को अपंग स्तर का पैदा होना पड़ सकता है।

5. प्रश्न: मनुष्य को सामूहिक आत्म-हत्या की दिशा में बढ़ता हुआ क्यों बताया गया है?

उत्तर: क्योंकि नशेबाजी जैसी दुष्प्रवृत्तियां, प्रकृति का विनाश, और आपसी स्नेह-सहयोग का अभाव मनुष्य को विनाश की ओर ले जा रहा है।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, विज्ञान की बढ़ोत्तरी और ज्ञान की घटोत्तरी का क्या परिणाम हो सकता है?

उत्तर: इसका परिणाम यह हो सकता है कि हमारा स्वर्ग जैसा धरती लोक धूल में मिल सकता है, यानी पूरी तरह नष्ट हो सकता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "ऊँचा महल खड़ा करने के लिए किसी दूसरी जगह गड्ढे बनाने पड़ते हैं।" इस पंक्ति का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

उत्तर: इस पंक्ति का प्रतीकात्मक अर्थ यह है कि कुछ लोगों की समृद्धि और सम्पन्नता (ऊँचा महल) की कीमत कई अन्य लोगों के शोषण, गरीबी और अभाव (गड्ढे) से चुकाई जाती है। एक का लाभ दूसरे की हानि पर आधारित होता है।

2. प्रश्न: नीतिरहित भौतिकवाद ने समाज में कौन-सी प्रमुख समस्याएँ पैदा की हैं?

उत्तर: नीतिरहित भौतिकवाद ने पर्यावरण प्रदूषण (वायु, जल), विकिरण का खतरा, पृथ्वी की उर्वरता का नाश, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, सामाजिक संबंधों में नीरसता, निष्ठुरता, और मनुष्य में सामूहिक आत्महत्या की प्रवृत्ति जैसी गंभीर समस्याएँ पैदा की हैं।

3. प्रश्न: यदि विज्ञान के साथ अध्यात्मवादी प्रचलन जीवित रहता तो क्या होता?

उत्तर: यदि अध्यात्मवादी प्रचलन जीवित रहता, तो भौतिक प्रगति का लाभ सभी को समान रूप से मिलता। सभी सुखी और समुन्नत होते, कोई अनीति नहीं करता और न ही किसी को उसे सहने के लिए विवश होना पड़ता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "विज्ञान ने जहाँ एक से एक अद्भुत चमत्कारी साधन उत्पन्न किए वहाँ दूसरे हाथ से उन्हें छीन भी लिया।" ऐसा क्यों कहा है? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि विज्ञान ने भौतिक सुख-सुविधा के साधन तो दिए, लेकिन साथ ही उसने नैतिकता, धर्म, और संयम जैसे मानवीय मूल्यों को भी नकार दिया। इन मूल्यों के बिना, मनुष्य ने वैज्ञानिक शक्ति का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि जो साधन सुख के लिए बने थे, वे ही प्रदूषण, विनाशकारी हथियार और सामाजिक शोषण का कारण बन गए। इस प्रकार, विज्ञान ने एक हाथ से जो सुख दिया, उसे दूसरे हाथ से छीन भी लिया, क्योंकि उसने उस सुख को बनाए रखने के लिए आवश्यक सद्ज्ञान और नैतिकता को नष्ट कर दिया।

2. प्रश्न: "तथाकथित प्रगति अवगति से भी अधिक महँगी पड़ेगी।" इस कथन की वर्तमान संदर्भ में विवेचना करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि जिसे हम प्रगति समझ रहे हैं (औद्योगीकरण, तकनीकी विकास), वह वास्तव में पतन (अवगति) से भी बदतर साबित होगी। वर्तमान संदर्भ में यह बिल्कुल सटीक है। प्रगति के नाम पर हमने पर्यावरण को नष्ट कर दिया है, जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन चुका है, और सामाजिक रिश्ते टूट रहे हैं। यह "महँगी" इसलिए पड़ेगी क्योंकि इसकी कीमत हमें अपने स्वास्थ्य, अपनी धरती के भविष्य और अपनी मानवता से चुकानी पड़ रही है। तात्कालिक भौतिक लाभ के लिए हम अपना स्थायी विनाश कर रहे हैं, जो किसी भी पतन से कहीं अधिक विनाशकारी है।

अध्याय 4: भौतिकवाद की उलटबाँसियाँ

यह अध्याय इस विरोधाभास पर केंद्रित है कि कैसे समाज में गलत चीजों को सही और फायदेमंद मान लिया गया है, और तात्कालिक लाभ के मोह में लोग दीर्घकालिक विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार आजकल समाज में कैसी उल्टी मान्यता बन गई है?

उत्तर: समाज में यह उल्टी मान्यता बन गई है कि विष को अमृत समझा जा रहा है, हानि को लाभ और सच्चाई के रास्ते पर चलने वालों को घाटे में माना जा रहा है।

2. प्रश्न: तात्कालिक लाभ को सब कुछ मान लेने का क्या दुष्परिणाम होता है?

उत्तर: तात्कालिक लाभ को सब कुछ मान लेने का दुष्परिणाम यह होता है कि लोग उसके भविष्य में होने वाले बुरे परिणामों के बारे में नहीं सोचते।

3. प्रश्न: लेखक ने कुकर्म करने वालों की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने उनकी तुलना मृगतृष्णा में भटकने वाले उस हिरन से की है जो कस्तूरी की खोज में दौड़ते-दौड़ते खीज, थकान और निराशा से बेमौत मर जाता है।

4. प्रश्न: अनुचित तरीके से कमाए गए लाभ का अंततः क्या परिणाम होता है?

उत्तर: अनुचित लाभ व्यक्ति को दुर्व्यसनों में फँसाता है, अपयश दिलाता है और अंत में व्यक्ति तथा पूरे समुदाय को पतन की ओर ले जाता है।

5. प्रश्न: विज्ञान द्वारा मिली सफलताओं ने लोगों में कैसा व्यामोह (भ्रम) उत्पन्न कर दिया है?

उत्तर: इन सफलताओं ने ऐसा भ्रम उत्पन्न कर दिया है कि लोग कुमार्ग पर चलते हुए भी खुद को सही मानते हैं और दुर्गति का शिकार बनते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "भटका हुआ अपने आपको सही मानता और सबको अपने साथ ले चलने का आग्रह करता है।" इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि आज के भौतिकवादी समाज में जो व्यक्ति गलत रास्ते पर चल रहा है, वह अपनी गलती स्वीकार नहीं करता। उल्टे, वह अपने गलत आचरण और विचारों को ही सही ठहराता है और दूसरों को भी उसी रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सच्चाई का रास्ता अपनाने वालों को घाटे में क्यों माना जाता है?

उत्तर: ऐसा इसलिए माना जाता है क्योंकि लोगों की दृष्टि संकीर्ण हो गई है और वे केवल तात्कालिक, भौतिक लाभ को ही सफलता मानते हैं। चूंकि सच्चाई और अच्छाई के रास्ते पर चलने से तुरंत कोई भौतिक लाभ नहीं दिखता, इसलिए लोग उसे घाटे का सौदा समझ बैठते हैं।

3. प्रश्न: "तथाकथित प्रगति अवगति से भी अधिक महँगी पड़ेगी।" इस कथन को अध्याय के संदर्भ में समझाएँ।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि भौतिकवाद पर आधारित जिस विकास को हम 'प्रगति' कह रहे हैं, वह वास्तव में 'पतन' (अवगति) से भी ज्यादा विनाशकारी साबित होगी। यह महँगी इसलिए पड़ेगी क्योंकि इसकी कीमत हमें अपने नैतिक मूल्यों, सामाजिक शांति और अंततः अपने अस्तित्व से चुकानी पड़ेगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "उलटबाँसियाँ" शब्द का प्रयोग भौतिकवाद की किन विडंबनाओं को उजागर करने के लिए किया है?

उत्तर: लेखक ने "उलटबाँसियाँ" शब्द का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया है कि भौतिकवादी सोच ने समाज के मूल्यों को पूरी तरह उलट दिया है। पहली विडंबना यह है कि जो कर्म (अनाचार, शोषण) वास्तव में हानिकारक हैं, उन्हें तात्कालिक लाभ के कारण फायदेमंद मान लिया गया है। दूसरी विडंबना यह है कि जो आदर्श (सच्चाई, सदाचार) समाज के लिए कल्याणकारी हैं, उन्हें घाटे का सौदा समझा जाता है। तीसरी विडंबना यह है कि अनैतिकता और अपराध के लिए भी साहस और पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है, लेकिन इस ऊर्जा का उपयोग विनाश के लिए हो रहा है, निर्माण के लिए नहीं। इन्हीं विरोधाभासों को लेखक "उलटबाँसियाँ" कहते हैं।

2. प्रश्न: मृगतृष्णा में भटकने वाले हिरन का उदाहरण देकर लेखक आधुनिक मनुष्य की किस मनोवैज्ञानिक स्थिति पर प्रकाश डाल रहे हैं?

उत्तर: इस उदाहरण के माध्यम से लेखक आधुनिक मनुष्य की उस मनोवैज्ञानिक स्थिति पर प्रकाश डाल रहे हैं जहाँ वह क्षणिक सुख और भौतिक सफलता (मृगतृष्णा) के पीछे अंधी दौड़ लगा रहा है। उसे लगता है कि यह

सफलता उसे सच्ची संतुष्टि (कस्तूरी) देगी, लेकिन वास्तव में वह एक भ्रम के पीछे भाग रहा है। इस दौड़ में वह अपना नैतिक बल, मानसिक शांति और मानवीय संबंध खो देता है और अंत में उसके हाथ केवल निराशा, थकान और आध्यात्मिक खालीपन ही लगता है, जो एक तरह की "बेमौत" मृत्यु के समान है।

अध्याय 5: असमंजस की स्थिति और समाधान

यह अध्याय वर्तमान समय के संकट (असमंजस) का विश्लेषण करता है, जहाँ भौतिकवाद और विकृत अध्यात्म, दोनों ही रास्ते अनुपयुक्त लगते हैं, और एक समन्वित समाधान प्रस्तुत करता है।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: आज की समस्याओं का मूल कारण क्या है?

उत्तर: आज की समस्याओं का मूल कारण प्रत्यक्षवाद की पृष्ठभूमि पर जन्मा भौतिकवाद है, जिसने नैतिक मूल्यों की उपयोगिता को नकार दिया है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनने के लिए किसने प्रोत्साहित किया है?

उत्तर: प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन ने मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनने के लिए प्रोत्साहित किया है।

3. प्रश्न: संसार में स्थायी सुख-शांति के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर: पारस्परिक श्रद्धा, सद्भावना, सहकारिता और नीति-निष्ठा आवश्यक है, क्योंकि इसी से मनुष्य दूसरों का हित सोचता है और न्याय को अपनाता है।

4. प्रश्न: प्रचलित अध्यात्म की क्या समस्या है?

उत्तर: प्रचलित अध्यात्म में इतनी विकृतियाँ और अवांछनीयता घुस गई है कि कसौटी पर कसने पर वह भी छोटे सिक्के की तरह अप्रामाणिक सिद्ध होता है।

5. प्रश्न: लेखक ने इस असमंजस का क्या समाधान सुझाया है?

उत्तर: समाधान यह है कि भौतिक विज्ञान को अध्यात्म तत्त्वज्ञान के साथ जुड़ना चाहिए और अध्यात्म का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसे प्रत्यक्षवाद की कसौटी पर भी खरा सिद्ध किया जा सके।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने भौतिकवाद और वर्तमान अध्यात्मवाद, दोनों को अनुपयुक्त क्यों माना है?

उत्तर: लेखक ने भौतिकवाद को इसलिए अनुपयुक्त माना है क्योंकि यह नैतिकता से रहित है और इसने अनगिनत युद्ध, शोषण और विनाश को जन्म दिया है। वहीं, वर्तमान अध्यात्मवाद को इसलिए अनुपयुक्त माना है क्योंकि वह आडम्बरों, विकृतियों और पाखंड से भर गया है और अपने मूल उद्देश्य (विश्व-कल्याण) से भटक गया है, जिससे वह अप्रभावी और अप्रामाणिक हो गया है।

2. प्रश्न: "सूर्योदय रहते हुए भी पूर्णग्रहण जैसा कुछ लग जाने के कारण दिन होते हुए भी अन्धेरा छाने लगता है।" इस पंक्ति का अध्यात्म के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि अध्यात्म का मूल तत्त्वज्ञान (सूर्योदय) तो शाश्वत और प्रकाशमान है, लेकिन उस पर विकृतियों और अनुपयुक्त प्रयोगों का आवरण (पूर्णग्रहण) छा गया है। इस कारण, अध्यात्म के मौजूद होते हुए भी (दिन होते हुए भी) समाज में अज्ञान और अनाचार का अंधकार फैला हुआ है और उसकी वास्तविक शक्ति प्रकट नहीं हो पा रही है।

3. प्रश्न: भौतिक विज्ञान और अध्यात्म के जुड़ने से क्या लाभ होगा?

उत्तर: दोनों के जुड़ने से विज्ञान विनाशकारी होने से बच जाएगा और अध्यात्म को प्रामाणिकता मिलेगी। विज्ञान शरीर की तरह काम करेगा और अध्यात्म प्राण चेतना की तरह, जिससे एक संतुलित, जीवंत और शक्तिशाली समाज का निर्माण होगा जहाँ भौतिक प्रगति और आत्मिक उन्नति साथ-साथ चलेगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "लगता है दोनों ही क्षेत्रों में अपने-अपने ढंग की विद्रूपता ने आधिपत्य जमा लिया है।" लेखक द्वारा बताई गई इन 'विद्रूपताओं' (कुरूपताओं) का तुलनात्मक विश्लेषण करें।

उत्तर: लेखक के अनुसार, भौतिकवाद की विद्रूपता उसकी नैतिकता-शून्यता है। यह शक्ति तो देता है, पर दिशा नहीं, जिससे मनुष्य दैत्य-दानव बन गया है और प्रकृति तथा मानवता का विनाश कर रहा है। इसके विपरीत, अध्यात्म की विद्रूपता उसकी प्रामाणिकता-शून्यता है। यह शांति का मार्ग तो दिखाता है, पर आडम्बर, पाखंड और स्वार्थ के कारण यह स्वयं शक्तिहीन और अप्रभावी हो गया है। भौतिकवाद की कुरूपता 'अति-सक्रियता' और 'विनाश' में है, जबकि अध्यात्म की कुरूपता 'निष्क्रियता' और 'अप्रासंगिकता' में है। एक का विष बाहरी दुनिया को नष्ट कर रहा है, तो दूसरे का खोखलापन आंतरिक शक्ति को खत्म कर रहा है।

2. प्रश्न: अध्याय में वर्णित "असमंजस" केवल एक वैचारिक दुविधा है या यह आधुनिक समाज के अस्तित्व का संकट है? तर्क सहित व्याख्या करें।

उत्तर: यह केवल वैचारिक दुविधा नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के अस्तित्व का संकट है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि एक रास्ता (भौतिकवाद) हमें सामूहिक आत्म-हत्या की ओर ले जा रहा है। दूसरा रास्ता (विकृत अध्यात्म) हमें इस संकट से निकालने में पूरी तरह अक्षम है। जब बचने के दोनों ही रास्ते बंद या अविश्वसनीय लगें, तो यह स्थिति अस्तित्व के संकट को दर्शाती है। समाज एक ऐसे दौराहे पर खड़ा है जहाँ एक मार्ग निश्चित विनाश की ओर जाता है और दूसरा मार्ग कहीं नहीं जाता। इसलिए, यह एक गहरा संकट है जिसका समाधान तुरंत खोजना आवश्यक है, अन्यथा मानव सभ्यता का भविष्य अंधकारमय है।

अध्याय 6: लेखक का निजी अनुभव

इस अध्याय में लेखक अपने जीवन को एक प्रयोगशाला बनाकर यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि परिष्कृत अध्यात्म व्यक्ति और संसार के लिए आज भी उतना ही उपयोगी और शक्तिशाली है।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने अपने जीवन का उपयोग किस विशेष प्रयोजन के लिए किया?

उत्तर: लेखक ने अपने जीवन का उपयोग यह खोजने के लिए किया कि क्या पुरातन काल का सतयुगी अध्यात्म सत्य है, उसका वास्तविक स्वरूप क्या है, और क्या उसके प्रयोग से आज भी ऋद्धि-सिद्धि जैसे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आत्मिक उन्नति के दो प्रमुख पक्ष कौन-से हैं?

उत्तर: पहला पक्ष है—साधक का परिष्कृत व्यक्तित्व (जीवन साधना), और दूसरा पक्ष है—साधना-उपासना का उपक्रम (कर्मकाण्ड)।

3. प्रश्न: लेखक ने किस आदि शक्ति की उपासना को चुना और क्यों?

उत्तर: लेखक ने आदि शक्ति गायत्री की उपासना को चुना क्योंकि उनकी श्रेष्ठता-वरिष्ठता असंदिग्ध है, उपासना क्रम सरल है और उनके संचित संस्कार भी इसी की पुष्टि करते थे।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "त्रिवेणी" क्या है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाती है?

उत्तर: "त्रिवेणी" है—ईश्वर के प्रति आत्मीयता (उपासना), जीवन में शालीनता (साधना), और करुणा-उदारता से भरा हृदय (आराधना)।

5. प्रश्न: लेखक ने अपने प्रयोग के लिए कैसी प्रयोगशाला का उपयोग किया?

उत्तर: लेखक ने अपनी काया (मानव शरीर) को ही प्रयोगशाला के रूप में उपयोग किया।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: आजकल की जाने वाली पूजा-उपासना अधिकतर निरर्थक क्यों सिद्ध होती है?

उत्तर: क्योंकि लोग जीवन साधना (व्यक्तित्व को परिष्कृत करना) की आवश्यकता को अनदेखा कर देते हैं और यह मानते हैं कि केवल पूजा-कर्मकाण्डों से ही सब कुछ हासिल किया जा सकता है। जबकि लेखक के अनुसार, यदि मनोभूमि और जीवनचर्या गंदगी से भरी हो, तो पूजा की प्रक्रिया निरर्थक ही सिद्ध होती है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, श्रद्धा-विश्वास की उपासना में क्या भूमिका है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, श्रद्धा-विश्वास की भूमिका एक बन्दूक की तरह है, जिस पर किसी भी मंत्र (कारतूस) को चलाया जा सकता है। श्रद्धा और विश्वास के बिना कोई भी उपासना क्रम सफल नहीं हो सकता, चाहे वह किसी भी मंत्र या विधान का हो।

3. प्रश्न: लेखक का प्रयोग क्यों महत्वपूर्ण था, जबकि शास्त्र पहले से ही अध्यात्म की महत्ता बताते हैं?

उत्तर: यह प्रयोग इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि आज का युग विज्ञान और प्रत्यक्षवाद का है, जो हर चीज का प्रमाण मांगता है। केवल शास्त्रों का हवाला देना पर्याप्त नहीं था। लेखक ने अपने जीवन में अध्यात्म को जीकर और उसके प्रत्यक्ष परिणाम दिखाकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि अध्यात्म आज भी उतना ही प्रामाणिक और शक्तिशाली है, जितना विज्ञान।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "परिष्कृत अध्यात्म का स्वरूप खोजने... के लिए एक व्यक्ति की एक जिन्दगी यदि पूरी तरह लग जाए तो उसे घाटे का सौदा नहीं कहा जा सकता।" इस कथन में लेखक के जीवन-दर्शन और उद्देश्य की गहराई का विश्लेषण करें।

उत्तर: यह कथन लेखक के असाधारण जीवन-दर्शन को दर्शाता है। जहाँ आम व्यक्ति जीवन का मूल्य भौतिक उपलब्धियों में मापता है, वहीं लेखक के लिए जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य एक भूली हुई सच्चाई को पुनः स्थापित करना है। उनके लिए, अपना पूरा जीवन एक महान सत्य की खोज में समर्पित कर देना "घाटे का सौदा" नहीं, बल्कि सबसे सार्थक निवेश है। यह दिखाता है कि उनका लक्ष्य व्यक्तिगत सुख या मोक्ष नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण के लिए एक प्रामाणिक रास्ता खोजना था। यह उनकी निस्वार्थता, दूरदर्शिता और उस महान उद्देश्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को प्रकट करता है।

2. प्रश्न: "छोटे-मोटे आघातों से डगमगाते नहीं।" लेखक ने अपने जीवन में गुण, कर्म और स्वभाव को परिपक्व बनाने की जो बात कही है, उसका आधुनिक जीवन की चुनौतियों से क्या संबंध है?

उत्तर: इसका गहरा संबंध है। लेखक का कहना है कि जब उत्कृष्टता (गुण), सदाचार (कर्म) और शालीनता (स्वभाव) व्यक्ति के चरित्र में गहराई से उतर जाते हैं, तो वे स्वभाव का अंग बन जाते हैं। आधुनिक जीवन तनाव, प्रलोभन और नैतिक दुविधाओं जैसी चुनौतियों (छोटे-मोटे आघातों) से भरा है। एक व्यक्ति जिसका चरित्र परिपक्व और मजबूत है, वह इन चुनौतियों का सामना बिना डगमगाए, अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए कर सकता है। इसके विपरीत, एक कमजोर चरित्र वाला व्यक्ति आसानी से भटक जाता है। इस प्रकार, लेखक द्वारा बताई गई जीवन साधना आधुनिक मनुष्य को आंतरिक स्थिरता और नैतिक बल प्रदान करने का एक अचूक मार्ग है।

अध्याय 7: त्रिधा भक्ति एवं उसकी अद्भुत सिद्धि

यह अध्याय लेखक की व्यक्तिगत साधना का परिणाम है। इसमें वे बताते हैं कि कैसे उन्होंने अपने जीवन को एक प्रयोग बनाया और परमार्थ के प्रति पूर्ण समर्पण से आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त कीं, जिनका उपयोग लोक-मंगल के लिए किया गया।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने अपनी साधना में क्या व्रतशीलता धारण की थी?

उत्तर: लेखक ने यह व्रतशीलता धारण की कि उन्हें जो भी आध्यात्मिक शक्ति मिलेगी, उसे वे ईश्वर के विश्व-उद्यान को बेहतर बनाने के लिए ही खर्च करेंगे और अपना जीवन औसत नागरिक स्तर पर जिएँगे।

2. प्रश्न: लेखक ने अपने जीवन को कैसा रखा?

उत्तर: उन्होंने अपना आहार, वस्त्र और रहन-सहन देश के गरीब से गरीब व्यक्ति जैसा रखा और किसी भी प्रकार के सम्मान या आत्म-प्रदर्शन की इच्छा नहीं रखी।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार उनकी निजी संपत्ति क्या है?

उत्तर: उनके पास निजी कही जाने योग्य कोई संपत्ति नहीं है; यहाँ तक कि उनकी पैतृक संपत्ति भी परमार्थिक कार्यों में लगा दी गई।

4. प्रश्न: लेखक ने अपने जीवन में कौन-सी प्रमुख सिद्धियाँ प्राप्त होने की बात कही है?

उत्तर: लेखक ने तीन प्रमुख सिद्धियों का उल्लेख किया है: (1) विशाल मात्रा में युग साहित्य का सृजन, (2) नव-सृजन के लिए लाखों साथी-सहयोगियों का संगठन, और (3) दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष और सत्प्रवृत्तियों के लिए हजारों प्रज्ञा केंद्रों की स्थापना।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, भक्ति की रक्षा कैसे होती है, इसका आधुनिक उदाहरण क्या है?

उत्तर: प्रह्लाद, गज और द्रौपदी की तरह, लेखक का स्वयं का जीवन इसका उदाहरण है, जहाँ ईर्ष्यालुओं और विद्वेषियों के आक्रमणों के बावजूद उनका कार्य बिना किसी प्रतिरोध के आगे बढ़ता रहा।

6. प्रश्न: बुढ़ापे में भी लेखक का शरीर और मन कैसा रहा?

उत्तर: अस्सी वर्ष की आयु में भी उनका शरीर, मन, संकल्प और पुरुषार्थ युवावस्था जैसा ही बना रहा, जो स्वयं में एक सिद्धि है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "व्यामोह से विरक्त मन इतना खाली हो गया जिसका 'वैक्यूम' एक सशक्त चुम्बक की तरह ईश्वरीय अनुकम्पा की अजस्र वर्षा करने लगा।" इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि जब लेखक ने स्वयं को सभी सांसारिक मोह-माया और संपत्ति (व्यामोह) से पूरी तरह मुक्त कर लिया, तो उनका मन पूरी तरह खाली और निर्मल हो गया। यह मानसिक शून्यता (वैक्यूम) एक शक्तिशाली आकर्षण केंद्र बन गई, जिसने बिना किसी प्रयास के ईश्वर की कृपा (अनुकम्पा) को अपनी ओर खींचा और उन्हें असीम सामर्थ्य प्रदान की।

2. प्रश्न: लेखक ने सहायता के लिए किसी के आगे हाथ क्यों नहीं पसारा? इसके पीछे क्या उद्देश्य था?

उत्तर: इसके पीछे अहंकार का प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक प्रयोग था। वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि जब कोई व्यक्ति सच्चे भगवत् प्रयोजन के लिए पूरी प्रामाणिकता से काम करता है, तो आवश्यक शक्ति और संसाधन (जनशक्ति, धनशक्ति) प्रकृति या दैवी सत्ता द्वारा स्वतः ही उपलब्ध करा दिए जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हिमालय बिना मांगे गंगा को जल देता रहता है।

3. प्रश्न: लेखक द्वारा रचित साहित्य की क्या विशेषता बताई गई है जिसे एक सिद्धि माना जा सकता है?

उत्तर: इसकी विशेषता यह है कि यह साहित्य इतनी विशाल मात्रा में है कि उसे एक मनुष्य के शरीर जितना तौला जा सकता है और उसकी हर पंक्ति गहन मंथन और व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। सामान्य बुद्धि से यह कार्य एक व्यक्ति के लिए एक जीवन में असंभव लगता है; ऐसा प्रतीत होता है कि इसे करने में पाँच जन्म लग जाएँगे, इसीलिए इसे एक सिद्धि कहा गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: अध्याय में वर्णित सिद्धियाँ पारंपरिक ऋद्धि-सिद्धियों (जैसे चमत्कार दिखाना) से किस प्रकार भिन्न हैं? लेखक इन सिद्धियों के माध्यम से अध्यात्म का कौन-सा स्वरूप प्रस्तुत करना चाहते हैं?

उत्तर: पारंपरिक ऋद्धि-सिद्धियाँ अक्सर व्यक्तिगत चमत्कार या शक्ति-प्रदर्शन तक सीमित रहती हैं। इसके विपरीत, लेखक की सिद्धियाँ **लोक-मंगल और विश्व-कल्याण पर केंद्रित हैं।** उनका साहित्य सृजन, संगठन निर्माण और सामाजिक कुरीतियों से संघर्ष, ये सभी सिद्धियाँ व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के नव-निर्माण के लिए हैं। इसके माध्यम से लेखक अध्यात्म का वह स्वरूप प्रस्तुत करना चाहते हैं जो **रचनात्मक, लोक-सेवी और सामूहिक परिवर्तन लाने में सक्षम हो**, न कि केवल व्यक्तिगत मोक्ष या चमत्कार तक सीमित हो। यह अध्यात्म को एक सामाजिक और क्रांतिकारी शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

2. प्रश्न: लेखक ने औसत नागरिक से भी निम्न स्तर का जीवन क्यों चुना, जबकि वे चाहते तो संपन्नता में रह सकते थे? यह उनकी "त्रिधा भक्ति" की साधना का अनिवार्य अंग कैसे था?

उत्तर: उन्होंने ऐसा जीवन इसलिए चुना क्योंकि यह उनकी साधना का आधार था। पहला, यह उनके **अहंकार को शून्य करता था** और उन्हें व्यामोह से मुक्त रखता था। दूसरा, यह उनकी **प्रामाणिकता को सिद्ध करता था** कि वे जो उपदेश देते हैं, उसे स्वयं जीते हैं। तीसरा, यह उन्हें आम आदमी के कष्टों से जोड़ता था। यह उनकी "त्रिधा भक्ति" का अनिवार्य अंग था क्योंकि:

- **उपासना:** ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण तभी संभव है जब मन सांसारिक वस्तुओं से खाली हो।
- **साधना:** न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन जीना और पुरुषार्थ करना ही सच्ची जीवन साधना है।
- **आराधना:** अपनी सारी शक्ति और संसाधन लोक-सेवा में लगाना ही सच्ची आराधना है, जो व्यक्तिगत संग्रह का त्याग करने पर ही संभव है।

अध्याय 8: सच्चे अध्यात्मवाद में निहित विलक्षण शक्ति

यह अध्याय सच्चे और झूठे अध्यात्म के बीच अंतर स्पष्ट करता है। सच्चा अध्यात्मवादी लोक-सेवी होता है, जबकि झूठा अध्यात्मवादी अपनी संकीर्ण स्वार्थपरता में लिप्त रहता है। लेखक बताते हैं कि आज ऐसी भक्ति की आवश्यकता है जो शक्ति से परिपूर्ण हो।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, ओछे स्तर का पूजा-पाठ और भजन-कर्मकांड क्या है?

उत्तर: अपने लिए स्वर्ग, मुक्ति, ऋद्धि-सिद्धि माँगना, चमत्कार दिखाना, लोगों से पूजा करवाना और अपनी पात्रता से बाहर की मनोकामनाएँ पूरी कराने का आश्वासन देना, ओछे स्तर का कर्मकांड है।

2. प्रश्न: सच्चा अध्यात्मवादी कौन होता है?

उत्तर: सच्चा अध्यात्मवादी अनिवार्य रूप से एक लोक-सेवी होता है, जो जन साधारण की समस्याओं के समाधान के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करता है।

3. प्रश्न: आज के समय में अध्यात्मवादियों को कहाँ खड़ा होना चाहिए?

उत्तर: उन्हें प्रत्यक्षवाद और वैभव से बड़े अनाचार पर अंकुश लगाने के लिए अगले मोर्चे पर खड़ा होना चाहिए।

4. प्रश्न: लेखक के मन में भक्ति को लेकर क्या असमंजस था?

उत्तर: उनके मन में यह असमंजस था कि क्या भक्ति केवल भाव-संवेदनाओं तक सीमित है या उसकी पूर्णता शक्ति से जुड़ने में है।

5. प्रश्न: लेखक को उनके मार्गदर्शक ने क्या समझाया था?

उत्तर: मार्गदर्शक ने समझाया था कि आदर्शों को बढ़ाने के लिए अध्यात्म सहायक है, लेकिन उसमें असाधारण शक्ति भी होनी चाहिए जो बुराइयों से लड़ सके और समाज में बड़ा परिवर्तन ला सके।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने किन लोगों की मनःस्थिति की तुलना सेठ, साहूकार और राजनेताओं से की है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने उन साधकों की मनःस्थिति की तुलना की है जो ईश्वर को प्रसन्न करके उनसे सामीप्य, मुक्ति या अन्य लाभ पाने की इच्छा रखते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे अमीर लोग अपने चापलूसों को इनाम देते हैं, वैसे ही ये साधक ईश्वर को एक अमीर सत्ता मानकर उसकी चापलूसी करके व्यक्तिगत लाभ उठाना चाहते हैं, जो कि एक ओछापन है।

2. प्रश्न: "यदि वह विशेषता सिद्ध न की जा सकी तो उससे धर्मनिष्ठा के अतिरिक्त और कोई बड़ा प्रयोजन साधने की आशा नहीं की जा सकती।" यहाँ किस 'विशेषता' की बात हो रही है?

उत्तर: यहाँ अध्यात्म की उस 'असाधारण शक्ति' की बात हो रही है जो समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ने, अच्छाइयों को बढ़ाने और पतनोन्मुख प्रवाह को मोड़कर सृजन में लगाने में समर्थ हो। यदि अध्यात्म में यह परिवर्तनकारी शक्ति सिद्ध नहीं होती, तो वह केवल व्यक्तिगत धर्मनिष्ठा तक सीमित रह जाएगा और युग परिवर्तन जैसा महान कार्य नहीं कर पाएगा।

3. प्रश्न: लेखक ने अनास्था को आस्था में बदलने की आवश्यकता क्यों महसूस की?

उत्तर: क्योंकि वर्तमान युग प्रत्यक्षवादी है, जो हर बात का प्रमाण चाहता है। ऐसे में केवल शास्त्रों का हवाला देकर अध्यात्म की शक्ति को सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए, एक प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना आवश्यक था, जो यह दिखा सके कि अध्यात्म में आज भी युग बदलने की क्षमता है, ताकि लोगों की अनास्था आस्था में बदल सके।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "ईश्वर के निकटवर्ती सम्बन्धी बनना... ऐसा ओछापन है जो किसी भी वास्तविक भगवद् भक्त का अनुगामी बनने वाले को तनिक भी शोभा नहीं देता।" इस कथन के माध्यम से लेखक भक्ति की प्रचलित धारणा पर क्या प्रहार कर रहे हैं?

उत्तर: इस कथन के माध्यम से लेखक भक्ति की उस स्वार्थी और व्यक्तिगत लाभ पर केंद्रित धारणा पर गहरा प्रहार कर रहे हैं, जहाँ भक्त का लक्ष्य ईश्वर से व्यक्तिगत संबंध बनाकर मोक्ष या सिद्धियाँ पाना होता है। लेखक इसे "ओछापन" इसलिए कहते हैं क्योंकि यह ईश्वर की विराट सत्ता को एक व्यक्तिगत लाभ देने वाले स्रोत तक सीमित कर देता है। सच्चा भक्त ईश्वर को विश्व का नियंता मानता है और स्वयं को उसके विश्व-उद्यान का एक सेवक। उसका लक्ष्य ईश्वर का सामीप्य पाना नहीं, बल्कि ईश्वर के संसार की सेवा करना होता है। इस प्रकार, लेखक भक्ति को 'पाने' की क्रिया से बदलकर 'देने' की क्रिया के रूप में स्थापित कर रहे हैं।

2. प्रश्न: "भक्ति का सम्बन्ध मात्र भाव-सम्वेदनाओं तक ही सीमित तो नहीं है? क्या उसकी पूर्णता शक्ति से संयुक्त होने में ही है?" इस प्रश्न में निहित द्वंद्व का आज के सामाजिक-धार्मिक संदर्भ में विश्लेषण करें।

उत्तर: यह प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आज धर्म और भक्ति का एक बड़ा हिस्सा केवल भावुकता, कर्मकांड और व्यक्तिगत शांति तक सीमित है। यह भक्ति अक्सर सामाजिक बुराइयों के प्रति निष्क्रिय रहती है। लेखक का द्वंद्व इसी निष्क्रिय भक्ति पर सवाल उठाता है। वे तर्क देते हैं कि सच्ची भक्ति को केवल भावुक होकर चुप नहीं बैठना चाहिए, बल्कि उसे एक सक्रिय 'शक्ति' बनना चाहिए जो अन्याय और अधर्म से लड़ सके। आज के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि धार्मिक लोगों को केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रहकर सामाजिक समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, असमानता और पर्यावरण विनाश के खिलाफ एक शक्ति के रूप में खड़ा होना चाहिए। भक्ति की पूर्णता तभी है जब वह भाव के साथ-साथ समाज को बदलने की शक्ति भी धारण करे।

अध्याय 9: भक्ति से जुड़ी शक्ति

इस अध्याय में लेखक अपने जीवन के ठोस उदाहरणों से यह सिद्ध करते हैं कि भक्ति में वास्तव में शक्ति होती है। वे बताते हैं कि कैसे अदृश्य सत्ता की प्रेरणा और शक्ति से वे ऐसे महान कार्य कर सके, जो किसी अकेले व्यक्ति के पुरुषार्थ से असंभव थे।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: किस प्रयोग के बाद लेखक का श्रद्धा-विश्वास असंख्य गुना बढ़ गया?

उत्तर: सन् १९५८ के सहस्रकुण्डीय महायज्ञ के सफल प्रयोग के बाद उनका श्रद्धा-विश्वास बढ़ गया।

2. प्रश्न: लेखक अपने द्वारा किए गए कार्यों का श्रेय किसे देते हैं?

उत्तर: वे मानते हैं कि ये सभी कार्य किसी दूसरे (निर्देशक शक्ति) ने किए हैं और श्रेय अनायास ही उनके सिर पर आ गया है।

3. प्रश्न: निर्देशक शक्ति अपने समर्पित व्यक्ति के लिए कैसी व्यवस्था करती है?

उत्तर: वह ठीक वैसी ही व्यवस्था करती है जैसे सेनापति मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिक के लिए आवश्यक सामग्री का प्रबंध करता है।

4. प्रश्न: युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि क्या है?

उत्तर: जब अदृश्य सत्ता देखती है कि मनुष्य की उद्वंडता सीमा से बाहर जा रही है, तब वह उसके कान पकड़कर उसे सीधी राह पर लाने के लिए प्रताड़ित करती है, यही युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि है।

5. प्रश्न: आज के समय में सुधार-परिवर्तन भूतकाल की तुलना में अधिक कठिन क्यों हैं?

उत्तर: क्योंकि भूतकाल में परिवर्तन क्षेत्रीय स्तर के होते थे, जबकि आज साधन और वाहनों के कारण पूरी दुनिया एक-दूसरे से जुड़ गई है और समस्याएँ भी वैश्विक हो गई हैं, इसलिए परिवर्तन भी व्यापक और अधिक जटिल हो गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: विज्ञान की योजनाओं में लेखक ने क्या कमी बताई है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, विज्ञान केवल भौतिक उपचारों से सुधार लाने की बात करता है। उसने भौतिक साधन तो दिए हैं, लेकिन मानसिक विकृतियों को दूर करने और मानवीय व्यवहार में सद्भावना बढ़ाने का कोई उपाय प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे उसकी प्रगति अंततः विनाशकारी सिद्ध हो सकती है।

2. प्रश्न: सतयुग की वापसी के लिए आज एकमात्र विकल्प क्या है?

उत्तर: एकमात्र विकल्प अध्यात्म ही है। जैसे पुरातन काल में तपस्वियों ने अपने तपोबल से चेतना-क्षेत्र का

परिष्कार करके सतयुग का निर्माण किया था, वैसे ही आज भी मनुष्य की देवोपम सद्भावनाओं को जगाकर ही समस्याओं का समाधान हो सकता है।

3. प्रश्न: लेखक ने अपने लिए कौन-सा नया कार्य चुना और क्यों?

उत्तर: लेखक ने सन् '९० के वसंत से सूक्ष्म जगत में भावनात्मक परिवर्तन लाने के लिए विशिष्ट स्तर की तप-साधना करने का कार्य चुना, क्योंकि उनके अनुसार, अब महाक्रांति की जिम्मेदारी उनके सहयोगी संभाल सकते हैं और उन्हें उच्चस्तरीय तपश्चर्या के लिए अवसर मिल गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "यह वैयक्तिक सफलता का प्रसंग नहीं माना जाना चाहिए...वरन् यह समझा जाना चाहिए कि भक्ति के साथ शक्ति का भी अविच्छिन्न सामंजस्य है।" इस कथन का गहन विश्लेषण करें।

उत्तर: यह कथन लेखक के दर्शन का सार है। वे अपनी सभी उपलब्धियों को व्यक्तिगत पुरुषार्थ का फल मानने से इनकार करते हैं। उनका तर्क है कि जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से स्वयं को एक उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित कर देता है, तो वह एक माध्यम बन जाता है और दैवी 'शक्ति' उसके माध्यम से कार्य करती है। यह 'अहं' का पूर्ण विसर्जन है। वे यह स्थापित करना चाहते हैं कि उनकी सफलता किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस सिद्धांत की सफलता है कि 'भक्ति' केवल एक भावना नहीं, बल्कि एक कार्यात्मक 'शक्ति' है। यह अध्यात्म को व्यक्तिगत साधना से उठाकर एक सार्वभौमिक नियम के स्तर पर स्थापित करता है।

2. प्रश्न: "जड़ को काटे बिना विषवृक्ष की कुछेक पत्तियाँ तोड़ देने भर से क्या कुछ बनने वाला है?" विज्ञान और अध्यात्म के संदर्भ में इस रूपक की व्याख्या करें।

उत्तर: इस रूपक में 'विषवृक्ष' आज की वैश्विक समस्याएँ (जैसे युद्ध, शोषण, पर्यावरण विनाश) हैं। 'पत्तियाँ' इन समस्याओं के बाहरी लक्षण हैं। 'जड़' इन समस्याओं का मूल कारण है, जो लेखक के अनुसार प्रत्यक्षवाद से जुड़ी अनैतिकता और मनुष्य के चेतना-क्षेत्र में घुसी विकृतियाँ हैं। विज्ञान 'पत्तियाँ तोड़ने' का काम करता है, यानी वह बाहरी समस्याओं (जैसे बीमारी का इलाज, गरीबी के लिए योजना) का भौतिक उपचार करता है, लेकिन मूल कारण (मानसिक विकृति) को नहीं छूता। वहीं, अध्यात्म 'जड़ काटने' का काम करता है। वह चेतना को परिष्कृत करके मनुष्य की सद्भावनाओं को जगाता है, जिससे समस्याएँ मूल से ही समाप्त हो जाती हैं। इसलिए, लेखक के अनुसार, स्थायी समाधान के लिए अध्यात्म ही एकमात्र विकल्प है।

अध्याय 10: आश्वासन एवं अनुरोध

इस अध्याय में लेखक अपने पाठकों और अनुयायियों को आश्चस्त करते हैं कि भले ही वे स्थूल शरीर से एकांत साधना में चले जाएँ या शरीर त्याग दें, सूक्ष्म रूप में उनकी शक्ति और मार्गदर्शन पहले से भी अधिक प्रभावी ढंग से मिलता रहेगा।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के एकान्त साधना में जाने के निर्णय से उनके अनुयायियों में क्या हड़बड़ी (चिंता) उभरी?

उत्तर: अनुयायियों को यह चिंता हुई कि समर्थ सेनानायक (लेखक) का सीधा संपर्क न रहने पर युग निर्माण की योजनाएँ कैसे चलेंगी, साधन कैसे जुटेंगे और प्रोत्साहन कहाँ से मिलेगा।

2. प्रश्न: लेखक ने अपने अनुयायियों को क्या आश्वासन दिया?

उत्तर: उन्होंने आश्वासन दिया कि सूक्ष्म चेतना के रूप में वे पहले की तरह ही अपने उत्तरदायित्व निभाते रहेंगे और उनकी प्रेरणा व प्रकाश किरणें सभी को मिलती रहेंगी।

3. प्रश्न: लेखक ने शान्तिकुञ्ज की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने शान्तिकुञ्ज की तुलना अपने प्रत्यक्ष शरीर से की है, जो उनके बाद भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

4. प्रश्न: भारतीय परम्परा में मृत्यु दिवस क्यों नहीं मनाए जाते?

उत्तर: क्योंकि भारतीय परम्परा मानती है कि दिव्य तत्त्व (आत्मा) कभी मरते नहीं, केवल शरीर बदलते हैं। सशक्त आत्मा शरीर का बंधन हट जाने पर और भी अधिक गतिशील हो जाती है।

5. प्रश्न: स्वामी रामतीर्थ ने "मौत के नाम खत" में क्या लिखा था?

उत्तर: उन्होंने लिखा था कि शरीर का भार हट जाने पर वे प्रकृति के तत्त्वों (हवा, चाँदनी, किरणें) के साथ मिलकर और अधिक उपयोगी बन सकेंगे तथा अधिक प्रसन्नता का अनुभव कर सकेंगे।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आत्मबल और अन्य बलों में क्या अंतर है?

उत्तर: आत्मबल संसार के समस्त अन्य बलों (जैसे विज्ञान) से अधिक सामर्थ्यवान है, क्योंकि विज्ञान की पहुँच केवल जड़ पदार्थों तक है, जबकि अध्यात्म जड़ और चेतना दोनों को प्रभावित कर सकता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "एक बीज वृक्ष बनकर नए हजारों-लाखों बीज उत्पन्न करता है" - इस रूपक का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

उत्तर: इस रूपक का प्रयोग यह समझाने के लिए किया गया है कि भले ही वे (एक बीज के रूप में) प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित न रहें, लेकिन उनके विचार और प्रेरणा एक विशाल वृक्ष की तरह फैलेंगे और उनके अनुयायियों (लाखों बीजों) के माध्यम से उनका कार्य कई गुना बढ़कर आगे बढ़ता रहेगा।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, स्थूल शरीर का बंधन हट जाने पर उनकी सामर्थ्य कैसे बढ़ जाएगी?

उत्तर: लेखक का मानना है कि स्थूल शरीर की सीमाएँ होती हैं। यह बंधन हट जाने पर उनकी चेतना असीम हो जाएगी और वे सूक्ष्म रूप से अधिक व्यापक स्तर पर, अधिक लोगों को एक साथ प्रेरणा और सहयोग दे

पाने में समर्थ होंगे। उनकी सीमित क्षमता असीम में बदल जाएगी।

3. प्रश्न: "जो पुकारेगा, जो खोजेगा उसे हम सामने खड़े और समर्थ सहयोग करते दीख पड़ेंगे।" इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इसका आशय यह है कि उनका सहयोग भौतिक उपस्थिति पर निर्भर नहीं करेगा। जो भी व्यक्ति सच्ची श्रद्धा और लगन से उनके मार्गदर्शन की कामना करेगा, उसे उनकी सूक्ष्म चेतना का अनुभव और सहायता ठीक उसी प्रकार मिलेगी, जैसे वे शरीर रूप में उपस्थित होकर करते थे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: इस अध्याय में लेखक मृत्यु की अवधारणा को किस प्रकार एक सकारात्मक और शक्तिशाली अवस्था के रूप में पुनः परिभाषित करते हैं?

उत्तर: लेखक मृत्यु को एक अंत के रूप में नहीं, बल्कि बंधन से मुक्ति और सामर्थ्य के विस्तार के रूप में पुनः परिभाषित करते हैं। वे इसे शरीर के भार से मुक्त होकर चेतना को असीम बनाने का एक अवसर मानते हैं। जहाँ सामान्यतः मृत्यु को निष्क्रियता और अंत समझा जाता है, वहीं लेखक उसे अधिक सक्रिय और गतिशील होने की अवस्था बताते हैं। यह भारतीय दर्शन की उस गहरी समझ पर आधारित है जहाँ आत्मा को अजर-अमर माना गया है और शरीर को केवल एक अस्थायी वस्त्र।

2. प्रश्न: लेखक का यह आश्वासन कि "सूक्ष्म स्तर की गतिविधियाँ अपना लेने पर भी हम अपने प्रत्यक्ष उत्तरदायित्वों को निभा सकने में भी समर्थ रहेंगे" - यह अध्यात्म और भौतिक जगत के बीच किस प्रकार का संबंध स्थापित करता है?

उत्तर: यह आश्वासन अध्यात्म और भौतिक जगत के बीच एक गहरा और अविभाज्य संबंध स्थापित करता है। यह बताता है कि सूक्ष्म जगत (चेतना, भावना) ही स्थूल जगत (भौतिक कार्य, घटनाएँ) का नियंत्रण और संचालन करता है। लेखक के अनुसार, असली कार्य चेतना के स्तर पर होता है और भौतिक जगत में उसके परिणाम केवल प्रकट होते हैं। इसलिए, सूक्ष्म जगत में साधना करके भी वे भौतिक जगत में चल रहे अपने मिशन को न केवल जारी रखेंगे, बल्कि उसे और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाएँगे।

अध्याय 11: हमारी भविष्यवाणी

यह अध्याय भविष्य के लिए एक आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। लेखक भविष्यवाणी करते हैं कि इक्कीसवीं सदी एक उज्ज्वल भविष्य लेकर आएगी, जहाँ विज्ञान अध्यात्म के अधीन होगा, मनुष्य की चेतना परिष्कृत होगी और सतयुग की वापसी होगी।

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, भविष्य की समस्याओं (दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन, अभावों का निराकरण) को विज्ञान क्यों नहीं सुलझा पाएगा?

उत्तर: क्योंकि विज्ञान केवल जड़ पदार्थों पर काम करता है और मनुष्य के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता नहीं ला सकता, जो समस्याओं का मूल कारण है।

2. प्रश्न: लेखक की भविष्यवाणी के अनुसार, भविष्य में विज्ञान का स्वरूप कैसा होगा?

उत्तर: भविष्य में विज्ञान का नाम भौतिक विज्ञान न होकर **अध्यात्म विज्ञान** हो जाएगा, और वह प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर काम करेगा।

3. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी में नारी की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी, जहाँ जागृत नारी अनावश्यक संतानोत्पादन से इनकार करेगी और अपनी शक्ति को समृद्धि और सद्भावना बढ़ाने में लगाएगी। उसका क्रिया-कलाप सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा की संयुक्त शक्ति जैसा होगा।

4. प्रश्न: भविष्य में शिक्षा का उद्देश्य क्या होगा?

उत्तर: शिक्षा केवल पेट भरने (उदरपूर्णा) तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि व्यक्तियों को प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान बनाने की अपनी जिम्मेदारी पूरी करेगी।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, यह उज्ज्वल भविष्य कैसे आएगा?

उत्तर: यह परिवर्तन अदृश्य जगत में व्याप्त दैवी चेतना के असाधारण रूप से उभरने से आएगा, जो वसंत के अभियान की तरह अनायास ही सब कुछ बदल देगा।

6. प्रश्न: सतयुग की वापसी का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि मनुष्य की दुरुपयोग में लगी क्षमताएँ सदुपयोग की ओर मुड़ जाएँगी और समाज में ऐसे अच्छे परिणाम उत्पन्न होंगे, जो सतयुग जैसे सुखद और शांतिमय वातावरण का निर्माण करेंगे।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक यह भविष्यवाणी क्यों करते हैं कि भविष्य में युद्ध, महामारी और जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याएँ नहीं होंगी?

उत्तर: लेखक का मानना है कि इन सभी समस्याओं की जड़ मनुष्य की चेतना में निहित विकृतियाँ हैं। जब अध्यात्म के प्रभाव से चेतना परिष्कृत हो जाएगी, तो मनुष्य का चिंतन और व्यवहार बदल जाएगा। जागृत नारी स्वयं जनसंख्या को नियंत्रित करेगी, और सद्भावना बढ़ने से युद्ध और अन्य संकटों की आवश्यकता ही समाप्त हो जाएगी।

2. प्रश्न: "खनिज तेल, विद्युत उत्पादन जैसे स्रोत ही सूख जाएँगे, तब विज्ञान जीवित कैसे रह सकेगा?" इस कथन से लेखक क्या संकेत दे रहे हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक संकेत दे रहे हैं कि भौतिकवाद पर आधारित वर्तमान सभ्यता टिकाऊ नहीं है। जब इसके ऊर्जा स्रोत समाप्त हो जाएँगे, तो यह अपने आप ढह जाएगी। तब मनुष्य को विवश होकर प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीने वाली जीवनशैली (प्राकृतिक जीवन) की ओर लौटना पड़ेगा, जहाँ विकृतियों के बढ़ने की गुंजाइश कम होती है।

3. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "यह सब कैसे होगा, इसकी प्रत्यक्षदर्शी योजनाओं का स्वरूप पूछने या जानने की जरूरत नहीं है"?

उत्तर: वे ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि यह परिवर्तन किसी मानवीय योजना या प्रयास से नहीं, बल्कि एक दैवी और आत्म-प्रेरित प्रक्रिया से होगा। जैसे वसंत आने पर प्रकृति में बदलाव अपने आप होते हैं, उसी तरह दैवी चेतना के जागृत होने पर समाज में परिवर्तन अनायास ही घटित होंगे, जिनकी पहले से कोई रूपरेखा नहीं बनाई जा सकती।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: अध्याय में वर्णित "अध्यात्म विज्ञान" की अवधारणा, वर्तमान "भौतिक विज्ञान" से मौलिक रूप से किस प्रकार भिन्न होगी?

उत्तर: दोनों में मौलिक अंतर उनके उद्देश्य और कार्यक्षेत्र का होगा।

◦ भौतिक विज्ञान का केंद्र 'पदार्थ' है और उसका उद्देश्य प्रकृति पर नियंत्रण कर भौतिक सुख-सुविधाएँ जुटाना है। यह 'क्या' और 'कैसे' पर ध्यान देता है, 'क्यों' और 'किसलिए' पर नहीं।

◦ इसके विपरीत, "अध्यात्म विज्ञान" का केंद्र 'चेतना' होगी। इसका उद्देश्य मनुष्य के चिंतन, चरित्र और व्यवहार को उत्कृष्ट बनाकर चेतना का विकास करना होगा। यह प्रकृति पर विजय पाने की बजाय उसके साथ सामंजस्य स्थापित करेगा। यह केवल भौतिक समस्याओं का बाहरी समाधान नहीं खोजेगा, बल्कि समस्याओं की जड़, यानी मानवीय विकृतियों का उन्मूलन करेगा। संक्षेप में, भौतिक विज्ञान बाहरी दुनिया को बदलता है, जबकि अध्यात्म विज्ञान आंतरिक दुनिया को बदलकर बाहरी दुनिया को रूपांतरित करेगा।

2. प्रश्न: लेखक की भविष्यवाणियाँ निराशावादी भौतिकवाद के ठीक विपरीत एक आशावादी आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। विश्लेषण करें कि यह आशावाद किस तर्क पर आधारित है?

उत्तर: यह आशावाद तीन प्रमुख तर्कों पर आधारित है:

1. समस्या के मूल कारण की समझ: लेखक का तर्क है कि सभी समस्याएँ बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक हैं—वे मनुष्य की चेतना की विकृति से पैदा होती हैं। इसलिए, यदि मूल कारण (चेतना) को ठीक कर दिया जाए,

तो सारी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी।

2. अध्यात्म की शक्ति में अटूट विश्वास: लेखक का यह दृढ़ विश्वास है कि अध्यात्म में चेतना को परिष्कृत करने की असीम शक्ति है। उन्होंने अपने जीवन के प्रयोगों से यह सिद्ध किया है, इसलिए उन्हें विश्वास है कि यही शक्ति वैश्विक स्तर पर भी काम कर सकती है।

3. दैवी योजना पर भरोसा: लेखक मानते हैं कि यह परिवर्तन केवल मानवीय प्रयासों से नहीं, बल्कि एक उच्चतर दैवी चेतना के हस्तक्षेप से होगा, जो सृष्टि के संतुलन को बनाए रखने के लिए समय-समय पर अवतरित होती है। उनका आशावाद इस विश्वास पर टिका है कि अंततः अच्छाई और दैवी विधान की ही जीत होगी।

परिवर्तन के महान क्षण: परिभाषाएँ

- **प्रत्यक्षवाद** - यह वह विचारधारा है जिसमें उसी चीज को सच माना जाता है जिसे बाजीगरों की तरह हाथों में देखा और दिखाया जा सके। जो प्रत्यक्ष नहीं है, वह अमान्य है, यही भौतिक विज्ञान और दर्शन की कसौटी है।
- **मनुष्य (नई मान्यता के अनुसार)** - नई मान्यता के अनुसार मनुष्य एक चलता-फिरता पौधा या अधिक से अधिक वार्तालाप कर सकने की विशेषता वाला पशु है।
- **धर्म (प्रत्यक्षवादी बौद्धिक बहुमत के अनुसार)** - यह अफीम की गोली भर है, जो पिछड़ों को कष्ट सहते रहने और अपनी विपन्नता के विरुद्ध मुँह न खोलने के लिए बाधित करता है।
- **आडम्बर, पाखण्ड और प्रपंच** - यह एक प्रकार की छिपी हुई (प्रच्छन्न) नास्तिकता है।
- **अभाव (संसार में)** - अभाव कृत्रिम है। यह इसलिए उत्पन्न हुआ है क्योंकि कुछ लोगों ने अधिक बटोर लिया है। यदि उत्पादित सम्पदा सभी में बँट गई होती तो सभी समान स्तर का जीवन जी रहे होते।
- **उपासना** - ईश्वर के प्रति सुनिश्चित आत्मीयता की अनुभूति "उपासना" है।
- **साधना** - जीवन में शालीनता की अविच्छिन्नता अर्थात् "साधना"।
- **आराधना** - करुणा और उदारता से ओतप्रोत अन्तराल में निरन्तर झरने की तरह उत्पन्न होती रहने वाली भावना "आराधना" है।
- **त्रिवेणी** - उपासना, साधना और आराधना, यही वह त्रिवेणी है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाती है।
- **पूजा-पाठ भजन-कर्मकाण्ड (ओछे स्तर का)** - अपने लिए स्वर्ग, मुक्ति, ऋद्धि-सिद्धि माँगना, चमत्कार-प्रदर्शन करना, लोगों से अपनी पूजा करवाना और उनकी पात्रता से बाहर की मनोकामनाएँ पूरी कराने का आश्वासन देना, ओछे स्तर का पूजा-पाठ और भजन-कर्मकाण्ड है।
- **सच्चा अध्यात्मवादी** - सच्चा अध्यात्मवादी अनिवार्य रूप से एक लोक-सेवी होता है, जो जन साधारण की समस्याओं के समाधान में अपनी शक्ति का प्रयोग करता है।
- **युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि** - जब अदृश्य सत्ता देखती है कि मनुष्य की उद्वेगता मर्यादा से बाहर जा रही है, तब वह उसके कान पकड़कर उसे सीधी राह पर लाने के लिए न केवल बाधित करती है, बल्कि प्रताड़ित भी करती है। इसी को युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि कहा जा सकता है।
- **विज्ञान (भविष्य में)** - भविष्य में विज्ञान का नाम भौतिक विज्ञान न होकर अध्यात्म विज्ञान हो जाएगा, जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर काम करेगा।
- **सतयुग की वापसी** - इसका अर्थ है कि मनुष्य की दुरुपयोग में लगी हुई क्षमताएँ सदुपयोग की ओर मुड़ जाएँगी और ऐसे अच्छे परिणाम उत्पन्न करेंगी, जिन्हें सतयुग की वापसी का नाम दिया जा सके।